इस विधि से वह अपने शत्रु अथवा दूसरों को अपनी इच्छा मानने के लिए बाध्य कर लेगा। परन्तु कभी-कभी ऐसा करने से मृत्यु भी हो जाती है। ये क्रियाएँ श्रीभगवान् द्वारा अनुमत नहीं हैं। वे स्पष्ट कहते हैं कि जो इनमें प्रवृत्त होते हैं, वे निःसन्देह असुर हैं। वैदिक शास्त्रीय विधान के विरुद्ध ऐसे कार्य करना श्रीभगवान् का अपमान करना है। इस संदर्भ में **अचेतसः** शब्द का प्रयोग है। स्वाभाविक मनोदशा में मनुष्य शास्त्र के विधि-विधान को अवश्य मानता है। जो असामान्य अवस्था में हैं, वे ही शास्त्र की अवज्ञा और उपेक्षा करते हुए तप-त्याग के मनोकल्पित मार्ग का अनुसरण करते हैं। आसुरी स्वभाव वाले मनुष्यों का अन्त, जैसा सोलहवें अध्याय में वर्णन है, सदा ध्यान रखना चाहिए। श्रीभगवान् उन्हें बारम्बार आसुरी स्वभाव वाले मनुष्यों के गर्भ में ही गिराते हैं। फलतः वे जन्म-जन्म में आसुरी स्वभाव धारण किए रहते हैं और श्रीभगवान् से अपने सम्बन्ध को नहीं जान सकते। यदि सौभाग्यवश, उन्हें ऐसे सद्गुरु के चरणों का आश्रय मिल जाय, जो वैदिक ज्ञान के पथ की ओर उनका मार्गदर्शन करने में समर्थ हों, तो वे भी इस बन्धन से छूटकर अन्त में परमगति को प्राप्त हो सकते हैं।

आहारस्त्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रियः।
यज्ञस्तपस्तथा दानं तेषां भेदमिमं शृणु।।७।।

आहारः =भोजन; **तु** =निःसन्देह; **अपि** =भी; **सर्वस्य** =सबको; **त्रिविधः** =तीन प्रकार का; **भवति** =होता है; **प्रियः** =प्रिय; **यज्ञः** =यज्ञ; **तपः** =तप; **तथा** =और; **दानम्** =दान (भी); **तेषाम्** =उनके; **भेदम्** =भेद को; **इमम्** =इस; **शृणु** =सुन।

अनुवाद

आहार भी सब को अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार तीन प्रकार का प्रिय होता है और वैसे ही, यज्ञ, तप तथा दान भी तीन-तीन प्रकार के होते हैं। उनके इस भेद को सुन।।७।।

तात्पर्य

अपनी-अपनी निष्ठा और प्राकृतिक गुणों के भेद के अनुसार मनुष्यों के भोजन, यज्ञ, तप और दान के प्रकार में भेद होता है। सब मनुष्य इन कर्मों में एक से नहीं होते। जो यह तत्त्व से जानता है कि कौन सा आचरण किस गुण के अन्तर्गत है, वह वास्तव में बुद्धिमान् है। इसके विपरीत, सब प्रकार के तप, दान और भोजन को समान मानने वाला अविवेकी और मूर्ख है। ऐसे भी कुछ मिशनरी कर्मी हैं, जो कहते हैं कि स्वेच्छानुसार कुछ भी कर्म करने से सिद्धि-लाभ किया जा सकता है। परन्तु ये मूर्ख मार्गदर्शक शास्त्रों के निर्देश के अनुसार आचरण नहीं करते। विधियों की कपोल-कल्पना करके ये सामान्य लोगों को पथभ्रष्ट ही कर रहे हैं।

आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः　।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः।।८।।